National Seminar on Bhasha, Sanskriti avm Sahitya ke Vividh Pariprekha Sanderbh Poorovter Bharat

भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक बहुलता का खान है पूर्वोत्तर : प्रो. नंदकिशोर पांडेय

राजीव गांधी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

▲ राजीव रंजन प्रसाद

'भाषा, संस्कृति और साहित्य के विविध परिप्रेक्ष्य : संदर्भ पूर्वोत्तर भारत' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी राजीव गांधी विश्वविद्यालय के एआईटीएस कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित हुआ। हिंदी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय एवं उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय-गीत के साथ आरंभ हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष प्रो. कृष्ण मुरारी मिश्र ने की, तो बीज-वक्तव्य केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. नंदकिशोर पांडेय ने दिया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. अमिताभ मित्र की ओर से प्रो. नंदकिशोर पांडेय के सम्मान में अभिनंदन-पत्र भेंट किया गया, जिसका वाचन हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. ओकेन लेगो ने किया।

प्रो. नंदकिशोर पांडेय ने आह्लाद भरे स्वर में कहा कि, 'उनका सीना गर्वित है, यह देखकर कि उनका पढ़ाया विद्यार्थी आज हिंदी विभाग में प्रोफेसर है, विभागाध्यक्ष है; यह व्यक्तिगत रूप से गर्व अनुभव करने का समय है कि उनके द्वारा शिक्षा प्राप्त किए छात्र अरुणाचल के उच्च शिक्षा में महती योगदान दे रहे हैं, तो हिंदी भाषा के माध्यम से अपनी भाषा, बोली, संस्कृति और लोक-साहित्य को भी समृद्ध कर रहे हैं।' उन्होंने मुख्य रूप से डॉ. जोराम यालाम नाबाम और डॉ. जोराम आनिया ताना का नाम लेते हुए कहा कि यालाम कुछ वर्ष पूर्व न्यूयार्क हिंदी सम्मेलन में उनके साथ थीं, तो इस बार डॉ. आनिया मारीशस हिंदी सम्मेलन में केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज द्वारा सम्मानित हुईं।

उन्होंने अपने बीज वक्तव्य में भाषा के पुराने रूपों से लेकर वर्तमान स्वरूपों पर चर्चा करते हुए कहा कि कई भाषाएं कालांतर में लुप्तप्राय हो

जाती हैं और उनकी जगह उसी लोक-समाज की एक नई भाषा प्रचलन में आ जाती है। संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश के समय की भाषाएं इसी तरह बदलाव को स्वीकार करती हुई आज हिंदी की खड़ी बोली के रूप में लोकप्रिय हो चली हैं। पूर्वोत्तर की भाषा, संस्कृति और लोक-साहित्य आज भी प्रचुरता में उपलब्ध हैं या बाहरी दबाव के बावजूद बची हुई हैं, तो उसका मुख्य कारण है कि यहां के लोगों ने इनको अपनी दांत से कस के पकड़ रखा है। भाषा के संरक्षण-सुरक्षा के लिए प्रेम और समर्पण अनिवार्य है। लोक-कवियों, संतों ने इसे जिलाने और लोक में बनाए रखने का जो यत्न किया है, वह स्तुत्य है। असम में सांस्कृतिक स्वाभिमान उच्चतर है, कारण कि शंकरदेव, माधवदेव आदि ने लोक की सत्ता में भाषा-साहित्य संबंधी ढेरों प्रयोग किए। सिर्फ लिखा ही नहीं नाटक भी किया, वाद्ययंत्रों का विकास तक किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में ही विषय-प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए भाषा संकायाध्यक्ष और हिंदी विभाग के प्रोफेसर हरीश कुमार शर्मा ने कहा कि भाषा के प्रति हमारा अनुराग, लगाव कम है जिसे महात्मा गांधी सबसे अधिक महत्त्व देते थे। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के विविध पक्षों पर पूर्वोत्तर के आलोक में गहन विचार-मंथन हो और नए संदर्भों, अर्थों, अभिप्रायों की खोज की जाए यह इस आयोजन का मुख्य प्रयोजन है। अपने वक्तव्य में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमिताभ मित्र ने कहा कि, 'भारत में कई स्तरों पर भिन्नता और विविधता है। पूर्वोत्तर की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति में भी जाति, धर्म, समुदाय, वर्ग इत्यादि के स्तर पर अनेकानेक बहुलताएं हैं। प्रो. कृष्ण मुरारी मिश्र ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि, 'भाषा मनुष्य के पास सबसे बड़ी संपत्ति है। इसके माध्यम से वह साहित्य एवं संस्कृति को बचाने का सारा उपक्रम कर सकता है। पूर्वोत्तर में भी यह होना समय की मांग है। अपनी लोक-धारणा, स्मृति, अनुभव, सांस्कृतिक पहचान आदि को बचाने के लिए आवश्यक है कि हम इसके महत्त्व को समझें और इसका उपयोग हम सांस्कृतिक मनुष्य के निर्माण के लिए करें।

इस द्वि-दिवसीय संगोष्ठी के पहले दिन चले दो तकनीकी सत्रों में कई वक्ताओं ने अपनी बातें रखीं। तुम्बम रीबा ने अपने वक्तव्य में अरुणाचल के गालो जनजाति की स्त्रियों की वर्तमान स्थिति का उल्लेख किया। उन्होंने अपनी संस्कृति में मान्य पारंपरिक प्रथाओं का उदाहरण देते हुए कहा कि, 'समाज में जितने भी बंधन हैं, नियम हैं, कानून है सब के सब स्त्रियों के लिए हैं; पुरुष तो शासक हैं, निर्णायक हैं। यद्यपि गालो जनजाति में स्त्रियां अपराजिता एवं सृष्टिकर्ता के रूप में सम्मानित हैं।' सोनम वाङमू ने अपने वक्तव्य में कहा कि, 'हर भाषा की अपनी प्रवृत्ति और व्याकरणिक पद्धति होती है। इसे पूरी तरह ग्रहण करने में कई सारी कठिनाइयां सामने आती हैं। हिंदी शिक्षण की चुनौतियां भी उनमें से एक है।

दिल्ली विश्वविद्यालय में शोधार्थी मणि कुमार ने असमिया साहित्य-संस्कृति में माधवदेव के अवदान को लेकर अपनी बातें रखीं और कहा कि माधवदेव की रचनाओं में अखंड भारत की अभिव्यक्ति है, तो सांस्कृतिक एकता के सारे तत्त्व विद्यमान हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय से आए प्रो. चंदन कुमार ने प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए असम-अरुणाचल सहित पूरे पूर्वोत्तर में फैले भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के विभिन्न उपादानों को गहरी अंतर्दृष्टि से देखने तथा उन्हें सूक्ष्मता के साथ पहचानने पर बल दिया। उन्होंने पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक एवं भावात्मक एकता का उदाहरण देते हुए कहा कि हिंदी के साथ उत्तर-पूर्व के सभी राज्यों का निकट का रिश्ता है।

दूसरे तकनीकी सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए दलित चिंतक-लेखक जयप्रकाश कर्दम ने कहा कि असमानता और भेदभाव भारतीय समाज की बुनियाद में हैं। इन्हें आसानी से नकारा नहीं जा सकता है। इस सत्र में वक्ता के रूप में मनोज कुमार मौर्य, मेमा चेरी, मोहिनी पांडेय, अजय कुमार, विजय कुमार ने अपनी बातें रखीं। उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य इस संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सत्यप्रकाश पाल ने दी, तो संचालन डॉ. जोराम यालाम नाबाम ने किया। दूसरे और तीसरे सत्र का संचालन डॉ. राजीव रंजन प्रसाद एवं वंदना पांडेय ने किया। संगोष्ठी के प्रथम दिन का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रम से हुआ जिसमें हिंदी विभाग के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, संगीत एवं चारु कला के कलाकारों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- हिंदी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश

The Seminar was held on 28-29 August 2018 which was jointly organized by the Department of Hindi, Rajiv Gandhi University and Uttar Pradesh Language Institute, Lucknow. On this occasion, Prof Nandkishore Pandey, Director of Central Hindi Institute, Agra and the Vice-Chancellor in-charge of the University Prof. Amitabh Mitra were honored by giving shawls, swabs, souvenirs, momentous etc. Prof. Nandkishore Pandey gave the key note address on the context of 'Bhasha, Sanskriti Aur Sahitya Ke Vividh Paripekshya : Sandarbh Poorvottar Bharat '. Prof. Pandey shared his overwhelming happiness to see his student as a Professor and the Head, Dept. of Hindi. It was times for him to feel personally proud that the students that he had taught were making a major contribution to the higher education of Arunachal Pradesh. According to him through Hindi other languages were also enriching the spoken culture and folk literature.